जागृति क
भावी

सुधा ओम धींगरा

भारत में लड़की को तो होश सँभालते ही यह सुनने को मिलता है कि वह पराया धन है। पति का घर उसका अपना होगा। उस घर में डोली में जायेगी और वहाँ से अर्थी उठने तक उसे उस परिवार का साथ निभाना है, चाहे कुछ भी हो जाए, उसे मायके नहीं लौटना। स्वयं माँ–बाप भी उसे यही कहते हैं –रोती हुई मत आना, मायके में हमेशा हँसती हुई आना.. पिता की इज़्ज़त का ख़याल रखना, परिवार की मान– मर्यादा की लाज रखना। ससुराल में उसे दूसरे घर की समझा जाता है। लड़की से औरत बन कर भी वह अपने लिए धरती नहीं तलाश पाती। मनोवैज्ञानिकों की राय है कि ऐसे दबाव लड़कियों पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं और लड़कियों में आत्मविश्वास की कमी हो जाती है। प्रत्यक्ष रूप में यह दिखाई नहीं देती। ये दबाव धीमे ज़हर की तरह काम करते हैं। सुसराल में प्रताड़ित हो कर भी कई बार चुप रह जाती है, क्योंकि अवचेतन में पड़े, वे दबाब उसके चेतन को अपने लिए खड़े होने से रोक लेते हैं ।

कई भारतीय महिलाएँ अमेरिका में आकर भी माँ–बाप और समाज की झूठी मान–मर्यादा के लिए जीवन तबाह कर लेती हैं।

उदाहरणार्थ एक किस्सा दे रही हूँ...

विद्या भानु श्री, दक्षिण भारत के एक पूर्व मंत्री की बेटी हैं। पंद्रह साल पहले शादी के बाद जब वह अमेरिका आई तो उसे यहाँ आने के

का पहला कदम
पीढ़ी की सुरक्षा

बाद पता चला कि उसका पति किसी अमरीकन महिला के साथ रहता है और उसने अपनी माँ की ख़ुशी के लिए विद्या से शादी रचाई थी। विद्या ने बहुत कोशिश की अपनी गृहस्थी जमाने की, पर असफल रही। जब भी वह उसे उस लड़की के पास जाने से रोकती तो नीरज उसे मारने-पीटने लगता। विद्या ने अपने पिता से शिकायत की और वे आकर उसे ले गए। पर एक वर्ष के भीतर ही उसे नीरज के पास वापिस छोड़ गए। यह जानते हुए भी कि वह किसी अमरीकन लड़की के साथ रहना चाहता है और वह तन-मन से किसी और का है। नीरज की माँ के ज़ोर डालने से ही यह शादी हुई थी। फिर उन्होंने ऐसा क्यों किया? अपनी ही बेटी को अजनबी देश, पराये लोगों में ऐसे पुरुष के हवाले कर गए जिसके मन में उसकी कोई चाह नहीं। कारण-सामाजिक दबाव, प्रतिष्ठा, दो बेटियां कुँवारी बैठी थीं, उनकी शादी में अड़चने आने लगी थीं। बड़ी बेटी पति का घर छोड़ मायके में बैठी थी। विद्या को बहनों के लिए अपनी कुर्बानी देनी पड़ी। विद्या की सास उसके पास आ गई और उसकी गृहस्थी जम गई। नीरज अपनी माँ से डरता था और उसने अमरीकन लड़की को छोड़ दिया। नीरज की माँ तो भारत वापिस लौट गई। नीरज अपनी सारी निराशा, अमरीकन लड़की से सम्बन्ध विछेद का क्षोभ, वर्षों से, विद्या पर निकाल रहा है। विद्या को प्रताड़ित करना अब उसकी आदत बन चुकी है और शोषण सहना विद्या का स्वभाव। जब वह उस पर हाथ उठाता है, विद्या की सास भी बेटे को कुछ नहीं कहती। उन्हें वह सब स्वभाविक लगता है, क्योंकि उनके पति भी उन्हें समय-असमय पीट लेते थे। विद्या भारत से अंग्रेजी में पीएचडी करके आई थी। पर नीरज ने उसे नौकरी नहीं करने दी। स्वावलंबी बन जाती तो नीरज उसे दबा न पाता। मन और आत्मा से पीड़ित अपनी तीन बेटियों के साथ गृहस्थी की गाड़ी खींच रही है। बेटियां कई बार उसे इस शादी से निकलने के लिए प्रोत्साहित कर चुकी हैं। वह आज भी परिवार की झूठी मान-मर्यादा, प्रतिष्ठा और समाज क्या कहेगा, की सोच लेकर बैठी है । उल्लेखनीय है कि भारत में पूर्व मंत्री साहब, उनका परिवार सभी खुशी-खुशी अपना जीवन जी रहे हैं और विद्या के दर्द का अहसास तक नहीं करते। कई बार वे विद्या के पास आ चुके हैं और उसकी अवस्था देख कर भी अनदेखा कर जाते हैं ।

विद्या जैसी अनगिनत भारतीय लड़कियाँ पूर्वाग्रहों से ग्रसित अमेरिका आती है। कई भारतीय पुरुष तो यहाँ भी वही मानसिकता लिए हुए हैं। यहाँ के माहौल में जब वे प्रताड़ित होती हैं तो कई विकल्प उनके सामने खुलते हैं। कुछ लड़कियाँ विकल्प चुन लेती हैं और कई विद्या की तरह माँ-बाप और समाज का मुँह देखतीं अपना सारा जीवन होम कर देती हैं। पूरे अमेरिका में साउथ एशियन की प्रताड़ित महिलाओं की सहायता के लिए संस्थाएँ हैं- आसरा, मैत्री, नारिका, सहारा, स्नेहा, रक्षा, अपना घर, आशा, सहेली, मानवी, सखी, सवेरा और अन्य कई।

अमेरिका में घरेलू हिंसा का अगर पड़ोसियों को पता चल जाता है और वे पुलिस को बुला लेते हैं तो भारतीय परिवारों और बच्चों पर बुरा असर पड़ता है। भारतीय यहाँ भी अपनी भारतीयता के साथ ही रहते हैं। कानूनन बच्चे परिवार से अलग कर दिए जाते हैं। ये संस्थाएँ प्रताड़ित महिलाओं और भारतीय संस्कृति, परम्पराओं, मान्यताओं, धार्मिक आस्थाओं की रक्षा करते हुए कानून से उन्हें बचाती हैं और बुरी स्थिति में तलाक भी करवातीं हैं और बच्चों तथा माँ का भविष्य सुरक्षित करने में पूरी सहायता करती हैं।

भारत हो या विदेश, घर और बच्चों के लिए महिलाएँ मर मिटती हैं। भारत में महिलाओं को स्वतंत्रता का बीज मन्त्र दे भी देंगे और उन्हें उनके अधिकारों के प्रति शिक्षित कर भी देंगे, तो क्या होगा? जब तक समाज और पुरुष वर्ग की संकुचित मानसिकता की युगों की बंद अँधेरी कोठरियों में परिवर्तन की रौशनी नहीं पहुँचती, तब तक स्त्री विमर्श बस विमर्श ही रह जायेगा। पुरुष वर्चस्व के पूरे ढाँचे को जागृत करने की आवश्कता है। भारत में आवश्कता है, महिलाओं की महिलाओं के प्रति संवेदनशीलता जागृत करने की। रिश्तों में बंधी महिलाएँ परिवार में ही एक दूसरे के साथ मर्द का हाथ उठने से पहले अगर खड़ी हो जाएँ तो धीरे-धीरे इस मानसिकता से छुटकारा पाया जा सकता है। महिलाएँ ही महिला को शिक्षित करने और उनके कानूनी अधिकार बताने की पहल भी करें।

हाल ही में मानसिक रोगों के सर्वे की रिपोर्ट छपी है जिसमें डॉ. रॉबर्ट विंटरहॉल ने लिखा है कि अधिकतर घरेलू हिंसा वाले परिवारों में पलने वाले बच्चों में धीरे-धीरे हिंसात्मक प्रवृत्ति पनपने लगती है और फिर यह पीढ़ी दर पीढ़ी चलती है। डेविड और नीरज के दादा और पिता दोनों अपनी पत्नियों को पीटते थे। डेविड और नीरज में वही आनुवंशिक वही प्रवृति आ गई है।

क्या आप चाहती हैं कि आप के बच्चों में हिंसक प्रवृत्ति पनपे। नहीं न.. तो उठिए..जागृति का पहला कदम उठाएँ अपने ही घर में बहू या बेटी पर किसी मर्द का हाथ उठने से पहले उसके साथ खड़ी हो जाएँ और बचाएँ अपनी भावी पीढ़ी को ग़लत संस्कारों से, जो अनजाने ही बच्चों में पड़ जाते हैं।